INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCEMENT IN SOCIAL SCIENCE & HUMANITY

An International Open-Access Peer Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 5.404 E-ISSN: 2455 –5150 P-ISSN: 2455 -7722

Sociological Study of Socio-Economic Status of Serving Muslim Women: With Reference to District Saharanpur

***Dr. Alka Rani, **Samreen Fatima**

*Professor, **Research Scholar
Motherhood University, Roorkee, Uttarakhand

Paper Received:

21 April 2022

Paper Accepted:

18 June 2022

Paper Received After Correction:

20 June 2022

Paper Published:

25 June 2022

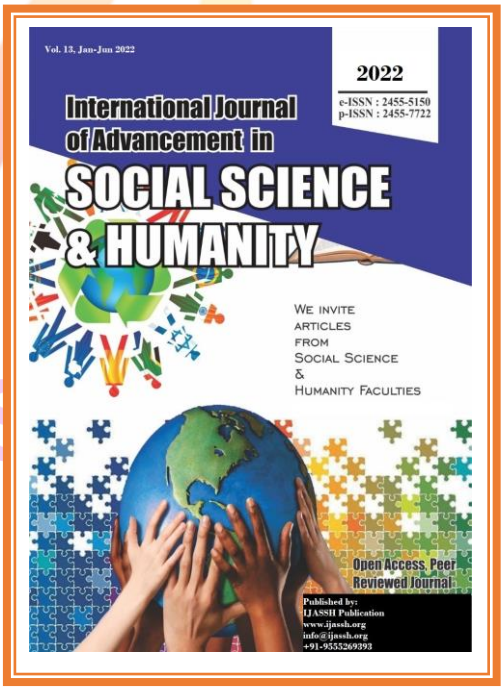

How to cite the article: Dr. Alka Rani, Samreen Fatima, Sociological Study of Socio-Economic Status of Serving Muslim Women: With Reference to District Saharanpur, IJASSH, January-June 2022 Vol 13; 46-52

सेवारत मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन

जनपद सहारनपुर के सन्दर्भ में।

**डा0 अलका रानी, ** समरीन फातमा*

** प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, **शोध छात्रा*

मदरहुड विश्वविद्यालय रूडकी, उत्तराखण्ड

ABSTRACT

In the present research, an attempt has been made to find out that what is the impact of serving Muslim women on their social, family and economic life by their actions? Is this effect positive or negative? What is the pace of change in behavioral patterns in the lives of serving Muslim women? What changes are being reflected in their social and economic life due to this pace of change? What is the range of coordination between husband and children in serving Muslim women? What is the direction of thinking of those women due to different types of tensions and harmony?

सारांश

प्रस्तुत शोध में यह ज्ञात करने का प्रयास किया है कि सेवारत मुस्लिम महिलाओं का उनके कार्यों द्वारा उनके सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है? यह प्रभाव सकारात्मक है या नकारात्मक सेवारत मुस्लिम महिलाओं के जीवन में व्यवहार प्रतिमानों में बदलाव की गति क्या है? बदलाव की इस गति से उनके सामाजिक व आर्थिक जीवन में क्या परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं? सेवारत मुस्लिम महिलाओ में पति व संतान के कार्यों से तालमेल की परिधि क्या है? उनकी भूमिका विभिन्न प्रकार के तनावों तथा पारिवारिक सामंजस्य से उन महिलाओं की सोच की दिशा किस ओर है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि मुस्लिम जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मुस्लिम धर्म में महिलाओं की भूमिका अन्य धर्मों की महिलाओं से कमतर नहीं है। लिहाजा मुस्लिम धर्म की प्रगति में शिक्षित मुस्लिम महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसलिए मुस्लिम महिलाओं का अध्ययन किये बिना महिलाओं के विषय में कहीं भी निष्कर्ष अधूरा रहता है। यही कारण है कि शोधकत्री ने प्रमुख रूप से सेवारत मुस्लिम महिलाओं को अपने शोध का केन्द्र बिन्दु बनाया है।

प्रस्तुत शोध सामान्य रूप से सेवारत मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक एवं पारिवारिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव पर आधारित है। वास्तव में इस शोध का उद्देश्य समाजशास्त्र परिप्रेक्ष्य में सेवारत मुस्लिम महिलाओं की विभिन्न भूमिकाओं के सामंजस्य और भूमिका–तनाव के विषय में गहन अध्ययन करना है। इस शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि आज की मुस्लिम महिलायें पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सफल हुई हैं या नहीं? यदि सफल हुई हैं तो वह किस प्रकार से इस मार्ग पर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है? उन्हें यहां तक पहुंचने के लिए किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ा है? साथ ही परिवार की महिलाओं के प्रति पुरूष की सोच समाज में उनकी भूमिका अपेक्षाओं तथा अनेक भूमिकाओं के बीच सेवारत महिलाओं का सामंजस्य भूमिका–द्वन्द तथा उनके कैरियर विकास में आने वाले सामाजिक सांस्कृतिक तनाव इत्यादि का अध्ययन तथा इनके समाजशास्त्रीय समाधानों को ज्ञात करने के लिए इस विषय पर दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है।

कहना न होगा कि प्राचीनकाल में इस्लाम धर्म के अन्तर्गत मुस्लिम महिलाओं का स्वरूप परम्परागत ही रहा है। अर्थात इस काल में मुस्लिम महिलाओं की दशा बहुत निम्न रही थी। महिलाओं का केवल अपमान ही होता था, परन्तु उनके प्रति घृणा भी विद्यमान थी। उस काल खण्ड में महिलाओं को बच्चा जन्ने की मशीन समझा जाता था। मौहम्मद साहब (सल्ल0) ने महिलाओं को उनके अधिकारों के विषय में अवगत कराया। मुस्लिम महिलाओं के वर्तमान को जानने का प्रयास करें तो ज्ञात होता है कि आज की महिलायें अपने इस स्वरूप को बहुत पीछे छोड़ चुकी है। अब वह समय आ चुका है जब पर्दे के घूघंट की ओढ़ में छिपी महिलाओं का संसार घर की चार दीवारी तथा उसमें सिमटे उनके कार्यों के बाहर आ चुका है। अन्य धर्मों की महिलाओं को विभिन्न संस्थानों में काम करते देख मुस्लिम महिलाओं में भी खुलेपन की चाह सामान्य रूप में बढ़ती जा रही है। आज महिला पुरूष की मात्र धर्म पत्नी या अर्धांगिनी ही न रहकर परिवार के रख–रखाव व उसके अस्तित्व को बनाये रखने में एक महत्वपूर्ण आर्थिक धुरी के रूप में उभर कर सामाने आयी है। ऐसे में मुस्लिम महिलाओं की सेवारतता स्वाभाविक रूप से सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सम्पूर्ण ढांचे को प्रभावित करने में एक प्रभावी संकेतक का कार्य करेगी। यह सत्य है कि यदि आज इस

क्षेत्र में अध्ययन किया जाए तो मुस्लिम महिलायें पुरूषों से अग्रिम स्थान पर परिलक्षित होंगी। यही कारण है आज इस महिला सेवारतता के समाजशास्त्र ने एक नवीन रूप विकसित कर स्वयं को आधुनिक रूप में ढालने का प्रयास किया है। इसका वर्तमान स्वरूप अधिक प्रभावी तथा रोमांचकारी सिद्ध हो रहा है।

मुस्लिम महिलाओं के कई मापदण्डो में परिवर्तन आते देखे गये हैं। नगरीय शिक्षित मुस्लिम महिलाओं ने जैसे–जैसे आर्थिक क्षेत्रों में अपने कदम मजबूत किये हैं उसी अनुपात में उन्होंने परिवार व राव की समृद्धि के लिए बच्चों के सीमित जन्म के प्रति सोचना प्रारम्भ कर दिया है। इसके फलस्वरूप मुस्लिम समाज में परिवार नियोजन के प्रति एक नवीन सामाजिक घटना उभर रही है। एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार अलीगढ़ की जिला अस्पताल की सी.एम.एस. डॉ० गीता प्रधान ने कहा कि मुस्लिम महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति तेज़ी से जागरूकता आई है। जनसंख्या नियंत्रण पखवाड़े में मुस्लिम महिलाए। स्वयं नसबन्दी ऑपरेशन कराने अस्पताल पहुच रही हैं।[1]

मौलाना निजामुददीन ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के महासचिव ने बी.बी.सी. से हुई बातचीत में कहा कि ''बन्द औलादों के बाद अगर कोई व्यक्ति एहतियात बरते और अपने परिवार को छोटा रखा और नसबन्दी न करवाये तो इसमें कोई एतराज़ नहीं है, लेकिन नसबन्दी गलत है।''[2]

सेम्युअल– ''परिवार नियोजन के प्रति भारत में जनता के कम जागरूक होने का कारण यहां का धर्म, परम्परा और भाग्यवाद है।''[3]

कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतवर्ष में समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में आज इस विषय पर शोध नगण्य ही है। इस विषय में साहित्य सर्वेक्षण करने के पश्चात् ही मुझे उक्त विषय पर शोध करने हेतु उत्सुकता उत्पन्न हुई। आज समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में मुस्लिम महिलाओं की भूमिकाओं के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालना तथा उन्हें उजागर करके इस सन्दर्भ को समाजशास्त्र की प्रमुख धारा में सम्मिलित करना नूतन नहीं तो कम से कम पुरातन और नूतन समाजशास्त्र के मध्य एक सेतु बनाने वाला प्रयास तो होगा ही।

शोध के उद्देश्य–

जहां तक प्रस्तुत शोध से जुड़े उद्देश्यों का प्रश्न है तो इस सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि इस शोध के अन्तर्गत सेवारत महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ज्ञात करने के साथ–साथ उनकी पारिवारिक भूमिका संरचना का ज्ञान प्राप्त करना, सेवारत मुस्लिम महिलाओं की परिवार नियोजन की स्थिति एवं भूमिका का पता लगाना, उनके विवाह की पंसद तथा विवाह विच्छेद के विषय में उनकी राय ज्ञात करना, उनमें सामाजिक परिवर्तन के रूझान को ज्ञात करना, आधुनिक जीवन शैली के प्रति बढ़ती उनकी रूचि का अध्ययन करना तथा अन्त में सेवारत मुस्लिम महिलाओं की भूमिका अपेक्षाओं, तनावों तथा सामंजस्य

के प्रकारों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शोध उपकल्पनाए–

किसी भी अनुसंधान वैज्ञानिक पद्वति का प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक होता है कि हम उस अनुसंधान से सम्बन्धित कुछ प्रारम्भिक ज्ञान तथा सामान्य अनुभव प्राप्त करते हैं। इस प्रकार शोध उपकल्पना एक ऐसा विचार है, जो किसी सामाजिक तथ्य के विषय में खोज करने की प्रेरणा देता है। कोई भी व्यक्ति अपरिचित क्षेत्र में अनायास ही प्रवेश नहीं करता, उसे प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त करनी पड़ती है। जिसके आधार पर वह अपने कार्यक्रम की रूपरेखा बनाता है। अतः कहने की आवश्यकता नहीं कि अनुसंधान कार्य में उपकल्पनाए मात्र पूर्वानुमान ही होती है।

''उपकल्पना एक व्यक्ति अवलोकित तथ्यों को समझने, समझाने और अध्ययन को मार्ग निर्देशित करने के लिए निर्मित एवं अध्यायी रूप से ग्रहण की गयी एक विवेकपूर्ण निष्कर्ष होती है।''[4]

प्रो० जान माल्डुंग ने निर्मित उपकल्पनाओं के निम्नलिखित तीन तत्व बताए हैं। 1– इकाई

2– चर (उद्दीपक)

3– मूल्य।

इन तीनों के मध्य वाक्य–विन्यास के द्वारा ही अन्तः सम्बन्ध स्थापित करते हुए उपकल्पनाए निर्मित की जाती हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि ''उपकल्पनाए व सामान्यीकृत काम चला प्रस्तावित विचार होती हैं, जिनका अध्ययन करने में परीक्षण करना अवशेष होता है।''[5]

वर्तमान शोध से जुड़ी उपकल्पनाओं का वर्णन निम्नवत् है–

1. संयुक्त परिवार से आने वाली सेवारत मुस्लिम महिलाओं की पारिवारिक समायोजन के प्रति रूचि बढ़ रही है।
2. सेवारत मुस्लिम महिलाओं का परिवार नियोजन के प्रति रूझान बढ़ रहा है।
3. तमाम धार्मिक व सामाजिक दबाव के बावजूद सेवारत मुस्लिम महिलाओं में आधुनिक जीवन शैली अपनाने की ओर रूझान बढ़ रहा है।
4. विलम्ब विवाह के प्रति सेवारत मुस्लिम महिलाओं की रूचि बढ़ रही है।

अध्ययन का प्रारूप–

प्रस्तुत शोध का अभिकल्प वर्णात्मक एवं अनुसंधात्मक है। जहां तक प्रस्तुत शोध से जुड़े निदर्शन, साक्षात्कार अनुसूची, तथ्य संकलन एवं तथ्यों के विश्लेषण का प्रश्न है तो इस सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि निदर्शन के रूप में इस शोध में 300 सेवारत मुस्लिम महिलाओं को लिया गया है। सर्वेक्षण के अन्तर्गत उत्तरादताओं का चुनाव अलग–अलग संस्थाओं के आधार पर किया है। उन संस्थाओं में प्रमुख रूप से शिक्षा विभाग, पुलिस प्रशासन, बैंक विभाग, रेल–परिवहन विभाग एवं चिकित्सा

विभाग के साथ–साथ विभिन्न व्यवसायिक प्रतिष्ठानों से महिलाओं को लिया गया है। चयन करते समय विवाहित, अविवाहित तथा 20 से 50 वर्ष तक की महिलाओं को निदर्शन में सम्मिलित किया गया है। इसी प्रकार सहारनपुर जनपद के विभिन्न स्थानों में कार्य करने वाली विभिन्न मुस्लिम महिलाओं की कुल संख्या लगभग 1000 है। समय व धन की बचत के साथ में इस शोध की वर्तमान प्रगति को ध्यान में रखते हुए यहां शोधकत्री द्वारा सहारनपुर नगर से 300 सेवारत मुस्लिम महिलाओं का चयन किया गया है। इस प्रकार चुना गया यह निदर्शन कुल का 50 प्रतिशत बैठता है जो वर्तमान शोध से वस्तुनिष्ठ तथ्यों के विश्लेषण के लिये पर्याप्त है।

तथ्यों का विश्लेषण, निष्कर्ष एवं सुझाव–

नारी पुरूष के जीवन का वह आवश्यक भाग है जिसके बिना पुरूष समाज में अधूरा है। महिला को जहाँ पत्नी की भूमिका निभानी होगी वहीं माता की भूमिका भी उसी भूमिका में समाहित होगी। आज महिलाए परिवार के रखरखाव व उसके अस्तित्व को बनाये रखने में एक महत्वपूर्ण आर्थिक धुरी के रूप में उभर कर सामने आयी हैं। व्यवहारिक ज्ञान तथा अनुभवों के द्वारा एकत्रित सामग्री के विश्लेषण के आधार पर शोधकत्री यह कहना चाहती है कि आधुनिकीकरण की तीव्र गति से सेवारत मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक दशायें, उनकी रूचियों एवं मूल्यों तथा उनकी व्यवसायिक प्रतिबद्धता प्रभावित हुई है। परिणामतः उनके प्रेरणादायक मूल्यों तथा व्यवहार प्रतिमानों में व्यापक परिवर्तन आते देखे गये हैं :–

संयुक्त परिवार के सम्बन्ध में पाया गया कि 66 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार के सदस्य थे। इसका एक मुख्य कारण यह था कि अधिकतर महिलाओं का मूल निवास नगर में है और वे नगर मे रहकर ही कार्यरत हैं। इस कारण उनको संयुक्त परिवार का चुनाव करना पड़ा। शोध में यह तथ्य भी उजागर हुआ कि जिन सेवारत मुस्लिम महिलाओं के परिवार का स्वरूप एकाकी था वे अपने परिवार के स्तर को ऊँचा उठाने के लिये अधिक से अधिक धन व साधन जुटाने के लिये प्रयत्नशील थीं। इसमें कुछ महिलाएं ग्रामीण परिवेश से आयी थी और उनका अपने परिवार से केवल भावनात्मक सम्बन्ध रह गया था। इसलिए वे एकांकी परिवार में रह रहीं हैं।

परिवार के समायोजन में 64 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य, 28 प्रतिशत उत्तम विचार रखते हैं। सर्वेक्षण के दौरान मात्र 8 प्रतिशत महिला उत्तरदाता उदासीन पाई गई। उन्होंने इस सम्बन्ध में कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की अतः स्पष्ट है कि सेवारत मुस्लिम महिलाए परिवार के समायोजन के स्तर पर सामान्य विचार रखती हैं।

परिवार नियोजन के सम्बन्ध में तथ्यों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश मुस्लिम महिलाए। अर्थात 70 प्रतिशत परिवार नियोजन के पक्ष में तथा 12 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने परिवार नियोजन के विरोध में अपनी राय व्यक्त की। सर्वेक्षण के दौरान 18 प्रतिशत उत्तरादाता तठस्थ पाये गये।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मुस्लिम महिलाए। परिवार के उच्च स्तर के लिए परिवार का छोटा होना अति आवश्यक मानती हैं।

बच्चों के सीमित जन्म के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि 40 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये गये जिन्होंने विलम्ब विवाह करने की प्रतिक्रिया व्यक्त की। उनका मानना था कि विलम्ब विवाह भी परिवार के बड़े आकार को रोकने में कारगार साबित होगा। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बढ़ती उम्र का परिवार नियोजन के साथ घनात्मक सम्बन्ध है।

नसबन्दी के सम्बन्ध में पाया गया कि 65 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने इसे अनुचित माना, उनका मानना था कि कुरान, हदीस नसबन्दी की आज्ञा नहीं देते, लेकिन कोई एहतियात बरतना चाहे तो इस्लाम में इसकी मनाही नही है। सर्वेक्षण के दौरान मात्र 05 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने नसबन्दी को उचित ठहराया, उनका कहना है कि कुरान में स्पष्ट कहा गया है कि संतान की सही ढंग से परवरिश करने के लिए बच्चों का सीमित होना आवश्यक है। 30 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन पाये गये उन्होंने इस सम्बन्ध में कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मंहगाई और बच्चों के लालन–पालन के बढ़ते खर्च को देखते हुए मुस्लिम महिलाए सीमित परिवार की दिशा में कदम बढ़ा रही हैं।

"सन्दर्भ"

1. *हिन्दुस्तान समाचार–पत्र, अलीगढ होम पेज (21 जुलाई 2019)*
2. *शर्मा विनोद, बी.बी.सी. न्यूज (15 फरवरी 2012)*
3. *सेम्युअल स्टोफर ''दि डिवाइन इन ऑफ सोशल रिसर्च इन सोशल वर्क रिसर्च'' दि ली प्रेस, ग्लेनको, न्यूयॉर्क (1962) पृ०–42*
4. *गुडे एण्ड हॉट ''मैथड्स इन सोशल रिसर्च'' मेगा हिल बुक कम्पनी कोगा कुशां, न्यूयॉर्क (1956) पृ०–263–272*
5. *जान माल्टुंग सोशल रिसर्च यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस (1967) पृ०–112*

REFERENCES

1. Hindustan newspaper, Aligarh, Home Page (21 July 2019)
2. Sharma Vinod, BBC News (15 February 2012)
3. Semuel Stopher "The divine-in of social research in social work research" The Lee Press, Glencoe, new York (1962), p 42
4. Gude and Hot "Methods in social research" Mega Hill Book Co. Coga Cushan, New York (1956) p: 263-272
5. John Molting Social Research University of Chicago Press (1967) p-112

IJASSH